7. लोककथा – पारिभाषिक शब्दावली

फेबुल (Feble):- फेबुल अंग्रेजी सबद लागे, जकर हिन्दी अरथ हेव हे – पशु–पक्षी कथा। मेनेक पशु–पक्षी, चरञ–चुनगुनी इयानि मानवेतर जीव से जुड़ल कहनी 'फेबुल' कहा हे। डिक्सनरी ऑफ फोक लोर में फेबुल कर परिभासा जे देल गेल हे ओकर हिन्दी रूपान्तर हे – ''इसके पात्र पशु होते हैं, जो मानव वाणी सा बोलते हैं, वे मानवत् आचरण करते हुए अपनी पाशविक सहज प्रकृत्तियों को प्रदर्शित करते रहते हैं। इन कथाओं का उद्देश्य सदाचार, न्याय, नीति आदि विषयक शिक्षाएँ देना है।'' (लोककथा विज्ञान से उद्धृत)

डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय फेबुल कर दु भाग मानल हथ, उनखर मते (i) कथाक ऊ भाग जकर में 'नैतिक शिक्षा' के पटतइर देइके बुझावल जाहे आर (ii) उपदेश कथन, जे कोनो लोकोक्ति रूपे इया श्लोक रूपे कहल जाहे। संस्कृत साहित्य कर एक पटतइर –

'अज्ञान कुल शीलस्य वासो देयो न कस्यचित
मार्जारस्य हि दोषेण, हतो गृधे जरदगव।''

ई पंक्ति संस्कृत साहित्य 'हितोपदेश' कर लागे। बिलाय आर गीधेक कहनीञ ई श्लोक देल गेल हे जकर पहिल भागे उपदेश आर दूसर भागें कथानक कर संकेत समाइल हे।

संस्कृत साहितेक पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा सरित सागर, शुक सप्तति हेन–तेन अइसन कइगो लिखित शिष्ट कहनी हे। हामीनेक लोककथाहूँ अइसन कतेक कहनी पावाहे। खोरठा हूँ अइसन पशु–पक्षी से जुड़ल कहनी पावा हे। ओकर में ई बात आयाँ देखवल गेल हे सियार सोबले चालाक पशु हे, ऊ छोट–बोड़ सोब जानवर पर आपन चालाकी देख हे। सियार आर मंगर कहनीञ सियार कर चालाकी के देखवल गेल हे।

लीजेंड (Legend):- लीजेन्ड अंगरेजी सबद लागे, जकर हिन्दी माने हेवहे – 'ऐतिहासिक लोककथा'। बहादुर लोकेक कहनी एकर में रह हे, जकर में अदना अदमी से हूँ बड़का बड़का काम करवल देखवल जाहे। धरमेक नामें बलिदान करवल जा हे इया साहस से ओकरा सामना करइत देखवल जाहे। एकरा बहादुरीक कहनीयों कहल जा पारे।

अइसन कहनीक विकास में सरधा भाव बेसी रह हे। सरधा भावेक चलते ही अलौकिक घटना के घटित हेल देखवल जाहे।

डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय जी लीजेंड के परिभासित करइत कहल हथ – ''लीजेंड लोककथाओं का वह प्रकार है, जिसमें कथानक में तथ्य घटना तथा परम्परा दोनों का समन्वय पाया जाता है।''

इन साइक्लोपीड़िया ब्रिटानिका में लीजेंड के बारे लिखल गेल हे ओकर भाव हे–''लीजेंड को ऐतिहासिक लोककथा का विकृत इतिहास कहा जा सकता है, इसमें ऐतिहासिक तथ्य का मुख्य अंश रहता है जो धर्मगाथाओं अथवा तृतीय श्रेणी की कथाओं से समर्पित अथवा विकृत होता रहता है।''

हामनिक खोरठा हूँ अइसन साहसिक कहनी (लोककथा) पावा हे, जइसे 'बितना, जमदूत कर कइद' 'केतकी फूल' हे।

मिथ (Myth):– मिथ अंगरेजी सबद लागे, एकर हिन्दी माने हेवहे–'पौराणिक कथा'। देवी–देवता बा बीर लोकेक अइसन कहनी जकर 'वर्ण्य विषय' 'पुराण का धर्मग्रंथ पर आधारित हे, मेनेक ऊ घटनाक बरनन 'धर्मग्रंथ हे इया नाञ, मगुर लोक आस्था हे, लोकेक बिसुआस हे, अइसने कहनी के' मिथ 'इया' 'पौराणिक कथा' कहल जाहे।

अइसन कहनीञ धरती आर मानव सिरजनेक कथा गोंथल जाहे। एकर अलावे ढेइर

अइसन सवाल जे दिमाइग के उरगुझाइ, देहे ओकर समाधनो अइसने कहनीञ पावल जाहे। जइसे–जमदूत आइझ शरीर धइर के काहे नाञ आव हे। चाँदे कालिख काहे लागल हे? चाँद गहन आर सुरूज गहन काहे लाग हे? गहनेक बादे डोम के दान काहे ले देल जा हे? भादो चउठेक चाँद देखले फांद काहे लाग हे? पानी कोन बइरसावे हे? असइन सवालेक जबाब 'पौराणिक कथाञ' पावाहे, जकरा सुइन के सुनवइयाक पूरा बिसुआस हेइ जाहे। आइझेक विज्ञानेक जुगों में भारतेक ढेइर लोक हथ जे एकर पर बिसुआस करहथ। अइसने अन्धबिसुआस लेइके ही अंगठी, बा माला, पिंधथ, पूजा–पाठ कर हथ दान–पुन कर हथ। पढ़लो लोक भादोक चाँद देखे ले डेरा हथ, बा चलचइते बिलाइ इया सियार डहर काइट देले रूइक जा हथ इया कोनो नी कोनो जरूरू कर हथ। अइसने कहनी के मिथ कहल जाहे।

फेयरी टेल (Fairy Tale / परीकथा):–फेयरी टेल अंगरेजी सबद हे जकर हिन्दी माने हेवहे–परीकथा। जर्मन भासाञ एकर मार्चेन (Marchan) आर स्वीडिस भासाञ सागा (Saga) कहल जा हे। अइसन कहनी –ई रूप पावस जाहे–

(क) परी सबसे मानुसेक मदइत
(ख) परी सबसे मानुसेक कहनी
(ग) परी सबसे मानुसेक अपहरण
(घ) परी सोबसे 'कृत्रिम पुत्र' देवेक
(ङ) मानुस से परीस्तान कर यात्रा
(च) प्रेमिका रूपे परी।

परी सबसे मानुस कर उपकार करेक ढेइर कहनी पावल जाहे। जकर पर परीक दया (कृपा) रहले ओकर धन–सम्पइत भोरल रह हे ।

श्री चन्द्र जैन परीक बारे लिखल हथ, उनखरे सबदें – ''परी की शक्ति अद्भूत होती है। वे क्षणभर में असंभव कार्यों को संभव बना देती है। उनकी दी हुई बकरी दूध के रूप में अमृत देती है तथा उनका दिया हुआ घड़ा कभी खाली ही नहीं होता है। ये स्वर्ग में रहती है और नन्दनवन में विहार करती है। नीले गगन में वे अपने चमकीले पंखों से उड़ा करती है। सुनते हैं कि ये सुन्दर युवकों पर शीघ्र मोहित होकर उन्हें आकाश में ले जाती है। परियाँ स्वभावतः बड़ा कोमल एवं दयालु मानी जाती है। मानव शिशुओं से उन्हें अत्यधिक स्नेह है। फलतः वे रोते हुए शिशुओं को देखकर उसे झूले में झुलाती है। अपने पंखों पर बैठाकर उसे आकाश में घुमाती है और स्वादिष्ट मिठाई खिलाकर उसे प्रमुदित करती रहती है।'' (लोककथा विज्ञान पृ0 27–28)

खोरठाङञ 'केतकी फूल' कहनी (लोककथा) परीकथा से जुटल (सम्बन्धित कहनी हे।

मोटिफ (अभिप्राय तत्व) – शब्दकोश में 'अभिप्राय' कर माने हे – आशय, तात्पर्य, मगुर लोकसाहितें अभिप्राय कर माने या पर्यायवाची हे कथानक रूढ़ि या प्ररूढ़ि। एकरा अंगरेजी में मोटिफ कहल जाहे।

लोककथाञ अभिप्रायतत्व कर ओहे ठाँव (स्थल) हे जे शरीर निर्माण में (रीढ़) (मेरूदंड) कर हे। जे नीयर सकत आर मजबूत चीजेक बनल चीज सकत आर मजबूत (टिकाउ) हेवहे ओहे नीयर आकर्षक अभिप्राय तत्व से बनल कहनी (लोककथा) मजबूत आर आकर्षक हेवहे। एकरे आधार पर कहनीक विकास हेवहे।

लोककथाञ अभिप्राय तत्व के एक कर बादे एक अइसन टाँकल जाहे कि आपने आप ओकर आकार बाढ़ल जा हे आर ओकर में रोचकता आइल जाहे। लोककथाञ बेसी अभिप्राय तत्व रहलो पर ऊ बेकार हेइ जाहे आर कम रहलो पर बेकार हेव हे, से ले

मोटा–मोटी तीन–चाइर घटनाक अभिप्राय तत्व कर कहनी (लोककथा) बेस हेवहे ।

लोककथा अभिप्राय तत्व कर महताक (माइनकर) ओजह ई नीयर हे –

(i) कथा प्रसंग के बीच–बीच में रोचकता लाने हे

(ii) कहनी (कथा) के चमत्कारिक मोड़ देहे

(iii) 'पात्र' कर 'चरित्र' निखारे हे।

(iv) समकालीन / तत्कालीन परिस्थितिक के जनव हे।

(v) सुनवइयाक मन लागल रह हे।

(vi) ढेइर कहनीञ सीख देल जाहे।

खोरठा लोककथाक अभिप्राय तत्व पटतइर रूपे कुछ हेठे देल जाइ रहल हे। कहनीक नाम कोष्ठक में हे –

1. बेस आर मीठ बोली बचन से हिंसक जीव (बाघ) करो दिल जीतल जाहे मगुर दिले ठेस पावले ऊ जान से माइर देहे। (बेस बेवहार)
2. राजा के आपन पुतउ से कुइयाँ ओगरेक काम दिएक – पुतउ से पानी पीवइया (राही) से सवाल पूछेक – सही जबाब नाञ देल पर पानी पीये नाञ दिएक।
(राजाक पुतउ आर पाँच राही)
3. ऊपर से दोस्ती आर भीतर से दुसमनीक भाव राखले नतिजा बेंडाइ जाहे।
(ऊँट आर सियार)
4. दानी राजा आपन दानशीलता के बनाइ राखे खातिर आपन राइज छोइड़ देहे।
(रानी राजा)
5. बुड़बक (मुरूख / मूर्ख) लोक के भ्रम से जानकार बुझेक मगुर संजोग से काम बनेक।
(फँटिगा पाँडे/सगुनवा)
6. तीन झूठ बोइल के गरीब मगुर चालाक गोरखिया के राजाक बेटी से बिहा करेक।
(अचरज कर बात)
7. बिता भइर के बितना संजोग से आर आपन चालाकी से निरंकुस राजा के बोहाइके मोराव हे आर आपने राजा बइन जाहे। (बितना)
8. आपन बुइध–गियान से गुचल आर लुटाइल राइज के वापस पावेक।
(सुमतइतगर पुतउ / चितरा रानी)
9. माय सभे पोखइरे पानी आवेक चलते बहिन के पोखइरे डुबाइ मोरवहथ मगुर ओकर पुरूष (पति) ओकरा फिन जीयत कइरके आर छुपाइ के ससुराइरे सारा/ सरजीन सबसे बिदा माँग हे। (पोखरिक दान)
10. सात भाय सभे बहिनेक अंगरी काटइल से सागे लागल खूइन खाइल बादे ओकर मांस खाय ले खडजन्तर बनवेक – विन्धे खातिर तारामाँचा बनवेक – सोब कोइ पारी–पारी बिन्धेक – छोट भायेक काँड से मोरेक – छोटे भाय से ओकर मांस नाम खाइक–माटी तरे गाड़ेक–तकर से एगो बेस बांस बूदा, जनमेक – बेस बाँसी बनेक, छोट भाय से बांसी किनेक – बादे किन अदमी बनेक
(सात भाय–बहिन)
11. अदमीक आयु कम करल कर विरोंघे एगो बुढ़ा मिस्तीरी (बढ़ई) से जमदूत के कइद करेक जोजना बनवेक – आर एकर में ऊ सफल हेइके ओकरा मोराइ देल – खोजाइरे आइल देवो के बुड़बक बनवल मगुर दारू पीयल बादे सोब उलइग (बताइ) देल।
(अदमीक हाथे जमदूत मराइल)

12. तकदीर आर तदबीर में कोन बोड़ एकर परीछाक खातिर एगो मुरूख गरीब (कमजोर) लोक के धन – जोंडराक बाइल के सोना बनेक।

(तकदीर आर तदबीर)

अइसन अइसन अड़गुड़ आर देदार कहनी हे, आर जतना कहनी हे ओतना ओकर अभिप्राय तत्व हे।

8. लोककथा लोक संस्कीरतिक वाहक

लोक कथा लोक संस्कीरतिक वाहक लागे, अइसन कहल जाहे। संस्कृतिक परिभासाक रूपे बसुदेव शरण अग्रवाल जी कहल हथ – ''ज्ञान और कर्म के पारस्परिक मेल को संस्कृति कहते हैं।'' एकर आधारे हामीन हियां पावही कि जे कुछ भी कहीं से कोइ सीख हे आर ओकरा कर्म क्षेत्र में उतारे हे, ऊ संस्कृति बइन जाहे मनेक ओकर में कुछ सुधाइर आइ जाहे।

संस्कृतिक पहिले लोक सबद लागल हे जकर माने हेल लोकेक संस्कृति। लोकेक संस्कृति ओहे दिन सुरू हेल जे दिन ऊ चाइर गोड़े चले छोइड़ के दु गोड़े चले लागल। काँचा खाइ छोइड़ के पकाइके खाय लागल । परिवार के खेयाल आइल माने बहु बनाइके छउवा पोसेक भाव आइल। बादे आपन, आर आपन जनी छउवा के सुरछा खातिर समूह बनाइके रहेक सोंचल आर समाज बनाइके एगो सामाजिक जीव (प्राणी) बनल। ई नीयर चल बनवासी (आखेट) जीवन छोइड़के गोठें (समूहें बा समाजें) रहेक भाव जागल। जखन आपन गुप्तांग कर बोध हेल, लाज–सरम बुझाइल तो पतइ या खाल / छाल से ओकरा ढाँपे सीखल रहे खातिर कुम्बा–कुरिया किंबा लाता (गुफा) कर जोगाड़ करल। ई नीयर खाई–पींधेक आर रहेक (भोजन, वस्त्र आर आवास / रोटी कपड़ा मकान) कर उता – सुता करेक सोंचल, ओहे दिन से मानव (लोक) संस्कृतिक जनम हेल आर एक नावां सइभताक विकास हेल।

समय गुजरले गेल। कोइ तेजी से विकास करल तो कोइ तनी कम गति से विकास करल इयानि कोइ तनी तेजी से सइभ (सभ्य) बनल तो कोई पेछुवाइ गेल यानि असइभ रहल। एकर में समथइर ठाँवेक लोक (मैदानी भाग के लोग) इया नदी घाटी सइभताक विकास तेजी से हेल आर पहाड़ी बा पठारी भागेक लोक पेछुवाइ गेला। एकर रूप तो एखनो पावल बा देखाइ दे हे।

आधुनिक समये, भारत गाँव कर देश हे बा कहा हे। काहे कि आदिम परिया से एखनेक वैज्ञानिक परिया तइक में भारतेक बेसी लोक गाँवे में रह हथ। सुरू से एखन तइक भारतेक साहिते दु रकमेक संस्कृति पावल जाहे। ऊ हे – शिष्ट संस्कृति आर लोक संस्कृति।

शिष्ट संस्कृति माने सभ्य आर आभिजात्य वर्ग कर संस्कृति जे वौद्धिक विकासेक पराकाष्ठा तइक पोंहचल हे। दुसर, लोक संस्कृति माने जन सामाइन (साधरण) कर संस्कीरति जकर जकर जनम जनताक प्रेरणा से हेल हे। एकर भीतर अंधबिसुआस, टोना–टोटका, डाइन–भूत, ओझा–मंतर हेन–तेन हे।

भारतेक सोबले पुरना साहित्य के 'वेद' कहल गेल हे। एकर में चाइर वेद कर नाम हे। ऋग्वेद के बिदुवान सभे शिष्ट संस्कृतिक (आर्य संस्कृतिक) दर्पन कहल हथ तो अथर्ववेद के लोक संस्कृतिक परिचायक मान रह। वैदिक काले जोन भासाक विकास हेल, ऊ वैदिक भासा कहाइल एकर भीतरे ऊँच आर कुलीन वर्गेक भासा रहे मगुर आम लोक जे अनपढ़–गँवार, किसान–मजदूर रहे ओकर भासा लौकिक भासा कहावल। एहे नीयर ऊँच आर कुलीन वर्गेक संस्कृति शिष्ट संस्कृति तो लोक सामाइन कर संस्कृति लोक संस्कृति

कहाइल। ई बात अखनो लागु हे।

मनवइ जखन बनवासी जिनगी जीय हलथ, तखने से लोककथा सुरू (चालु) हेल। छउवा के रिझाके–बुझाके बा गियान दिये खातिर कहनी (लोककथा) सुनवल जा हल। एहे खातिर लोककहनी रचल गेल।

भारत चूँकि गाँवेक देस लागे, ओकरो में ई झारखण्ड तो एखनो गाँवे से भरल हे। हामीन कर खोरठा भासा लोक भासा लागे। भले एकर आपन खोरठा संस्कृति नाञ हे ताउ जे हियाँक लोककथाञ पावा हे ऊ सदानी संस्कृति हे। जे सदान जंदे से बा जहाँ से आइल आपन संग ऊ संस्कृति के लेले आइल हथ।

लोक संस्कीरतिक सामाइन विसेसता हे – लोक बिसुआस, प्रेम, सहिष्णुता, श्रम, समता, सह अस्तित्व, प्रकृतिक सहचारी, आडम्बरहीन माँय–माटी आर माँय कोरवा भासाक सम्मान।

सामाइनतः संस्कीरतिक भीतरे लोकेक आचार–विचार, रीति रेवाज,खान–पान, रहन–सहन, परब–तिहार नेग आर संस्कार जनित काम। चूँकि संस्कीरति विकासशील हे, परिवर्तनशील हे हस्तान्तरित आर अनुकरणीय हे, तकर । चलते आइझेक लोक विदेशी (पाश्चात्य) संस्कृति के अपनावे लागल हथ आर ओकर अनुसारे आपन रहन–सहन, आचार–विचार, रीति–रेवाज के बदलेक कोसिस कइर रहल हथ तो कुछ पुरना परियाक आपन संस्कृति के बचावे में लागल हथ।

गर्भ में आइल पहर से मरन पहर तइक में लोक के कइ रकमेक संस्कार करल जाहे, एहे लोक संस्कृति लागे। एकर संगे लोक जे परब –तिहार करहे ओहो एकरे भीतर आवहे। हर परबेक पाछु कोइ नी कोइ लोककथा छुपल हे। जइसे करम परब कर पाछुञ करमा–धरमा कर कहनी हे तो मंडा परब का पाछुञ 'बाणासुर' कर कहनी हे ओइसने बँउडी आर सरहुल कर पाछु कोनो नी कोनो लोककथा हे।

खोरठा लोककथाञ मनवइ संगे हिंसक जानवर बाघ–साँप करो कहनी सुनवल जाहे। खोरठा लोककथाञ पावही कि की तरी चरञ–चुनगुनी (परेवा), बेंग आर साँप एगो दुखिया के मदइत कर हथं (लोककथा – बिन बंधनाक काठी) में ई पटतइर पावल जाहे। एगो बाघ कइसे एगो दुखियाक मदइतगर हेव हे आर ओकरा बहु नीयर राखहे। ओकर हर बात मान हे मगुर हुवें दोसर झीक ओकर दोसर बहिन ओकर बड़ाइ नाञ करल परे ओकरा जान से माइर देहे। लोककथा बेस बेहहार में ई पटतइर हे।

एगो लोककथा 'बेस बेवहार' कर मूल सार हियाँ देल जाइ रहल हे – मंगरी आर सुकरी दु बहिन रहल। दुइयो खूब लड़ हलथ। लड़ल पर राइते भाख हलीक कि तोरा बाघो–साँपों नाञ लेग हउ। ई भाखान ओकरा लाइग गेल। बाघ ओकरा बोन लेइ जाहे। ठहरे जे बा पूछे, सुकरी ओकर बडाइ (प्रशंसा करइक) बाघ खुस हेइ जाय। ओकरा बड़ा दुलार से राख हे, ओहो ओकर सेवा सुसार पुरूस (पति) नीयर करीक। लुगा–गहना–गुरिया, खायेक सामान से ऊ हटवाहार से माँइग के लाइन दे। एक दिन नइहर जाइक बात कहइल। ऊ बड़ा प्रेम से गाँव पोंहचाइ देल आर कहल कि आठ दिनेक बादे घुइर अइबे। नाञ तो हाम लाने अइवउ।

नहइर जाइके ऊ सोब बात कइह सुनावइल। ओकर बहिन के मंगरी करो मने लोभ जागल आर ओहो बाघ संगे जाइक सोंचइल। ऊ कहइल अबरी तोञ नाञ हाम बाघ संगे जाइब। बाघ रोज पेछुवाइर घाइर आवे, जोहइत रहे। कहल बात नीयर दुइयों लड़ला आर मंगरी काँदले बहराइल। बाघ रोज पेछुवाइर धइर अइबे करे, ऊ मंगरी के धरल आर लेले चलल। थोरे धुर गेल बादे बाघ पूछल–हामर मुँह कइसन देखा हे। ऊ कहइल – बाघ लागे तो कइसन देखाबे, बाघे नीयर नी देखा हे। बाघ सोंचल–नइहर आइके एकर मती आर

नेती बेंडाइ गेल आर गोसाइ के जान से माइर देल।

एहे ले कहल गेल हे – ''एहे मुँहे भात आर एहे मुँहे लाइत।'' ई नीयर देखल जाहे कि लोककथा लोक संस्कृतिक वाहक लागे। माने लोककथा सीख (शिक्षा) देहे। दुलार (प्रेम), सम्मान देहे। मुँहेक दोसे माइर खाइल जाहे। ई लोक बिसुआस आर लोक माइनता हे। लोक संस्कृति परकीरतिक सहचरी लागे मेनेक परकीरतिक हर चीज, जीव–जन्तु मनवइ कर सहायक हेक हथ।